13 अक्टूबर

हेतौ सूत्र की व्याख्या

(ख) क्रिया के प्रति हेतु का उदाहरण → पुण्येन हरिः दृष्टः।

यहाँ पर 'देखना' क्रिया का हेतु (कारण) पुण्य है। पुण्य अमूर्त (= निराकार) होने से क्रियाहीन व्यापार है। इसकारण (ग) हेतु [redacted] को अभिव्यक्त करनेवाले शब्द 'पुण्य' में तृतीया हुई। पुण्य क्रियाहीन व्यापार [redacted] है। अतएव यह करण नहीं हो सकता।

जो क्रिया के पूर्व (पहले) रहता है वह हेतु होता है। जो क्रिया के पश्चात् (बाद) होता है वह फल होता है। उपर्युक्त वाक्य में देखना क्रिया है, उससे पूर्व 'पुण्य' रहता है।

इस सूत्र 'हेतौ' के मत में फल भी हेतु में समाहित (मिल) हो जाता है। हेतु से 'फल' अर्थ भी अङ्गीकार करने पर (ग) अध्ययनेन वसति [= अध्ययन (पढ़ाई) के लिये रहता है] में 'अध्ययन' शब्द से तृतीया हुई है। यहाँ पहले रहने की क्रिया है, इसके बाद फलरूप में 'अध्ययन' होता है। इसप्रकार अध्ययन वास क्रिया (रहना) का फल है।

इसका क्या फल होगा। इस ज्ञान के बिना कार्य में प्रगति नहीं होती। इसप्रकार फल भी अपने ज्ञान द्वारा इष्ट (वांछित) साधन होता है। अतएव अध्ययन फल का हेतु के रूप में ग्रहण होने से तृतीया विभक्ति हुई।

फल का हेतु होना भी वक्ता की इच्छा पर निर्भर है। वक्ता जब हेतु के रूप में फल को नहीं कहना चाहता, तब "अध्ययनाय वसति" वाक्य में अध्ययन में चतुर्थी विभक्ति आती है। यहाँ अध्ययन का फल होना मुख्य रूप से वांछित है।

[redacted]